चर्चित कहानी

माया मेहता

एक क्राइम रिपोर्टर की लव स्टोरी

संजीव श्रीवास्तव

माया मेहता

एक क्राइम रिपोर्टर की लव स्टोरी

संजीव श्रीवास्तव

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: नवम्बर, 2023

© संजीव श्रीवास्तव

एक स्पष्टीकरण

यह लंबी कहानी हिंदी की मासिक पत्रिका 'पाखी' में साल 2023 में धारावाहिक रूप में 'एमएमएस उर्फ़ माया मीडिया संगम' नाम से प्रकाशित थी। इस कहानी को पूरी तरह या इसके किसी भी भाग, किरदार के प्रसंग, उसके संवाद को फिल्म, टीवी सीरियल, वेब सीरीज या नाट्य मंचन में शामिल किया जाना कॉपीराइट नियम का उल्लंघन माना जाएगा। अगर कोई प्रकाशक प्रिंट संस्करण प्रकाशित करना चाहें या कोई निर्माता-निर्देशक इस पर आधारित स्क्रीन प्रस्तुति (फिल्म/टीवी सीरियल/वेब सीरीज आदि) बनाना चाहें तो कहानी के लेखक से औपचारिक तौर पर जरूर संपर्क करें।

समर्पित

कल्पना,

शाश्वती,

शुभकामना

को सप्रेम

कहानी की बात

माया कौन है?

दोस्तों, यह कहानी पिछले करीब पांच-छह साल से कंप्यूटर में लिख कर रखी हुई थी। समाचार जगत की औपचारिक पेशेवर व्यस्तता के चलते इसे दोबारा पढ़ने और प्रकाशन के लिए कहीं भेजने का समय नहीं मिल पा रहा था। लेकिन लॉकडाउन पीरियड में इसे पढ़ने का वक्त मिला। कहीं-कहीं आवश्यक संशोधन किया। जब प्रकाशन व्यवसाय फिर से पटरी वापस आ गया तब इसे एक बड़ी पत्रिका को भेजा। संपादक महोदय का जवाब आया- इतनी लंबी कहानी प्रकाशित करना मुश्किल है। फिर मैंने दूसरी पत्रिका को इसे प्रकाशनार्थ भेजा, वहां से भी ऐसा ही जवाब मिला। तीसरी पत्रिका को भेजा – वहां से भी किन्हीं दूसरे शब्दों में कमोबेश यही जवाब था कि इतनी लंबी कहानी कम से कम पांच कहानियों का स्थान ले लेगी।

हर संपादक का अपना दृष्टिकोण होता है। पत्रिकाओं में पन्नों की सीमाएं होती हैं। किसी रचना को स्थान देना और न दे पाना उनकी सम्मानजनक स्वायत्तता है, उसमें दवाब की कोई गुंजाइश नहीं होती। करीब चार-पांच पत्रिकाओं से सखेद वापसी के बाद यह कहानी फिर लंबे समय तक मेल पर ही पड़ी रह गई।

कुछ समय के बाद मैंने इसे साहित्यिक मासिक पत्रिका पाखी को भेजा। वहां से भी पहले यही विवशता व्यक्त की गई थी लेकिन प्रभारी संपादक पंकज शर्मा जी के इन शब्दों ने आशांवित किया कि उन्हें कहानी काफी पसंद आई और वो इसे छापने को इच्छुक हैं। इस जवाब से यह जाहिर हुआ कि उन्होंने कहानी पूरी पढ़ ली है। उसके बाद निर्णय लेने की स्थिति में आए हैं। निश्चय ही बाकी जगहों से केवल आकार में लंबी होने के चलते उसे वापस किया गया था। जाहिर है उनका यह जवाब बहुत साहसी था जो कि उत्साह जगाने वाला था। वो इतनी लंबी कहानी छापने को तैयार दिखे। उन्होंने कहा- मुझे थोड़ा समय दीजिए फैसला करने के लिए।

मैंने कहा- जितना चाहें उतना समय लीजिए। पूरी आजादी के साथ विचार-विमर्श कीजिए। लगभग पांच-छह महीने के बाद पंकज जी ने कहा- इसे एक बार में नहीं बल्कि धारावाहिक रूप में प्रकाशित करने का फैसला लिया गया है। कहानी में रोचकता है और इसका संदर्भ महानगर का मीडिया जगत है। पठनीयता है इसमें।

अब इसके बाद यह फैसला होना बाकी था कि इसका पहला भाग किस महीने में आएगा। और यह तय होने में भी करीब-करीब तीन-चार महीने लग गए। क्योंकि संपादक जी ने बताया कि घोषित किये हुए विशेषांकों को निकालने के बाद इसे शुरू करते हैं। यह जवाब उचित था।

इस तरह यह लंबी कहानी पाखी के पन्नों पर सात भागों में प्रकाशित होती रही। मुझे उम्मीद थी कि कहानी संभवत: तीन भागों में समाप्त हो जाएगी लेकिन हुक पॉइंट के साथ इसे सात भागों में प्रकाशित किया गया। पत्रिका में इस कहानी का शीर्षक था– 'एमएसएस उर्फ़ माया मीडिया संगम'। लेकिन अब इसे नया नाम दिया गया है- माया मेहता : एक क्राइम रिपोर्टर की लव स्टोरी।

यह कहानी जब पत्रिका में धारावाहिक प्रकाशित हो रही थी, तब कई पाठकों के फोन और मैसेज आते रहे। कइयों ने कहा- ये माया कौन है? कहीं 'फलां' तो नहीं! कहीं 'वो' तो नहीं! उनमें से कइयों का इशारा दिल्ली की कुछ नामचीन महिला पत्रकार और लेखिका की तरफ था जिनकी अपनी प्रतिष्ठा है। मैंने उनको कहा- यह कहानी पूरी तरह से काल्पनिक है और इसके हर किरदार के नाम भी काल्पनिक हैं। इसमें सचाई केवल परिस्थितियां, परिवेश, कालखंड और प्रवृतियां हैं। यह कहानी उस पत्रकारिता की एक झलक भर है, जहां सियासत और बाजार इसे प्रभावित करने वाले दो अहम कारक हैं। मानो इनके बिना पत्रकारिता ही संभव नहीं। जबकि वास्तव में ये पत्रकारिता के दो विषय भर होते हैं, ये आधार कत्तई नहीं हैं।

इस कहानी में माया और दीपक का रिश्ता भी पत्रकारिता बनाम सियासत और बाजार का रिश्ता है, जिसका सूत्रधार बतौर संपादक विल्सन प्रसाद है। कहानी के अंदर की कहानी यह है कि माया इसमें 'शिवानी भटनागर की कहानी' नामक एक उपन्यास

लिखती है, जिसके विमोचन पर उसका रुतवा पूरे मीडिया जगत में चकाचौंध भर देता है। यह उसकी कामयाबी है और यही उसके अंत की वजह भी।

आशा करता हूं आप सब यह कहानी पढ़ने में जरूर रुचि दिखाएंगे। मुझे यह भी उम्मीद है कि कहानी के कई प्रसंग आपके दिलों के झकझोर सकते हैं। कहानी कैसी लगी- इसे जरूर मेरे मेल आईडी पर लिखिएगा।

सादर।

संजीव श्रीवास्तव

1

आज के अख़बारों में माया की किताब के विमोचन की ख़बरें देख दीपक चकित रह गया! हर रिपोर्ट और तस्वीरों को वह बड़े ही ध्यान से देखता-पढ़ता रहा। कभी भूत तो कभी वर्तमान में डूबता-उतराता रहा। विमोचन की तस्वीरें निहारता तो आंखों में अतीत के चलचित्र कोलाज बनाने लगते। माया क्या से क्या हो गई!

अखबारों ही नहीं बल्कि टीवी समाचारों में भी माया और उसकी किताब की चर्चा छाई हुई थी। सोशल मीडिया पर तमाम लोग माया को बधाइयाँ दिये जा रहे थे। लेकिन यह सोचकर वह उलझन में फंस जाता कि कल माया दिल्ली में थी, तो उसे पता क्यों नहीं चला! माया ऐसी तो नहीं थी। उससे वह कभी कुछ छुपाती नहीं थी। इस बार उसने ऐसा क्यों किया? दीपक भीतर ही भीतर प्रश्नातुर होता जा रहा था।

हिंदी उपन्यास का ऐसा भव्य लोकार्पण समारोह शायद उनसे पहली बार देखा, सुना। आयोजन फिक्की, हैवीटेट या इंडिया इंटरनेशनल सेंटर नहीं बल्कि फाइव स्टार होटल में हुआ था। कैबिनेट मंत्री ही नहीं कुछ नामचीन उद्योगपति भी उस समारोह की शोभा बढ़ा चुके थे। दीपक तब और चमत्कृत हुआ जब उसने अंग्रेजी के भी समाचार पत्रों में माया की पुस्तक के विमोचन के समाचार को बड़ी-बड़ी तस्वीरों के साथ देखा। हिंदी को लेकर आज से पहले ऐसी गर्वानुभूति दीपक को कभी नहीं हुई। शायद माया